मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MVS–004

एम. ए. (वैदिक अध्ययन) (एम. ए. वी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

एम.वी.एस.-004 : निरुक्त एवं प्रातिशाख्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र* **दो** *खण्डों में है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

निर्देश : *निम्नलिखित में से किन्हीं* **चार** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 15 अंक निर्धारित हैं।* 4×15=60

1. निरुक्त क्या है ? निरुक्त के रचयिता का परिचय लिखिए।
2. भावविकारों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. भाषा-विज्ञान के मूल सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।
4. सिद्ध कीजिए कि निरुक्त ही भाषा-विज्ञान के मूल में है।

5. निपात से आप क्या समझते हैं ? उपसर्ग एवं निपातों का वर्णन कीजिए।
6. मन्त्रों के स्वरूप एवं प्रतिपाद्य की विवेचना कीजिए।
7. निर्वचन के भारतीय सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।
8. यास्क के मत से देवताओं के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

निदेश : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।* 4×10=40

1. देवता आकार चिन्तन पर टिप्पणी लिखिए।
2. प्रातिशाख्य के प्रयोजन का वर्णन कीजिए।
3. उपसर्ग विषयक मतों का समीक्षात्मक वर्णन कीजिए।
4. अन्तरिक्ष स्थानीय देवता के स्वरूप का वर्णन प्रस्तुत कीजिए।
5. पठित अंश के आधार पर उदात्त तथा अनुदात्त स्वरों का वर्णन कीजिए।
6. वेद की अर्थवत्ता का वर्णन कीजिए।
7. 'बृहद्देवता' का रचयिता कौन है ? इस ग्रन्थ की विषय-वस्तु का वर्णन कीजिए।
8. निरुक्त के प्रयोजन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।